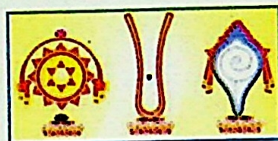
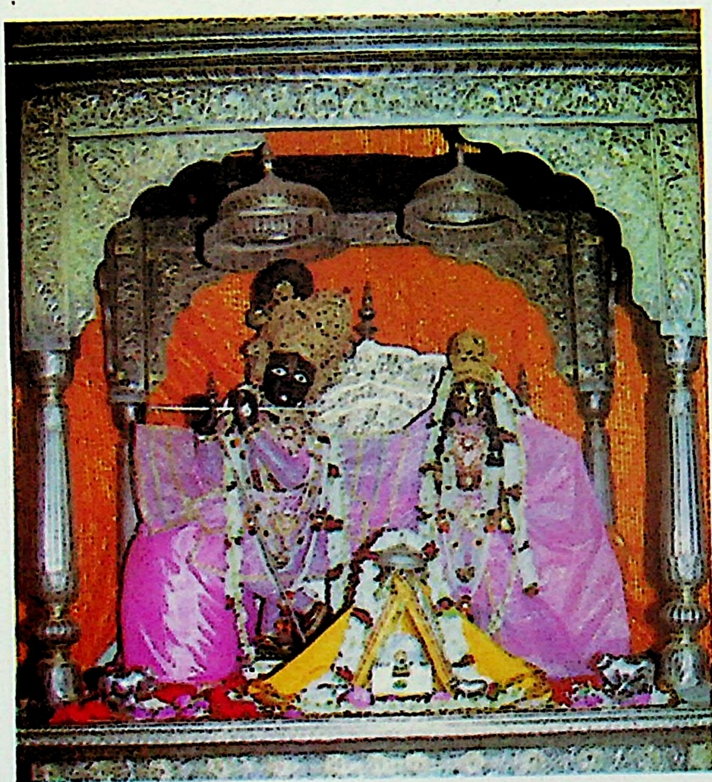


महर्षिवर्य श्री सनकादि संसेव्य – श्री सर्वेश्वरप्रभु

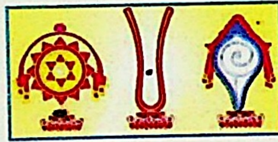
।। श्री राधासर्वेश्वरो जयति।।





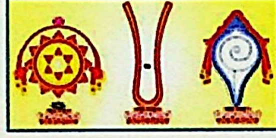
भगवान श्रीसर्वेश्वर – राधामाधव प्रभु

।। श्री राधासर्वेश्वरो जयति।।



देवर्षिवर्य श्रीनारदजी

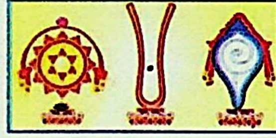
।। श्री राधासर्वेश्वरो जयति।।



श्रीसुदर्शनचक्रावतार आद्याचार्य जगद्गुरु

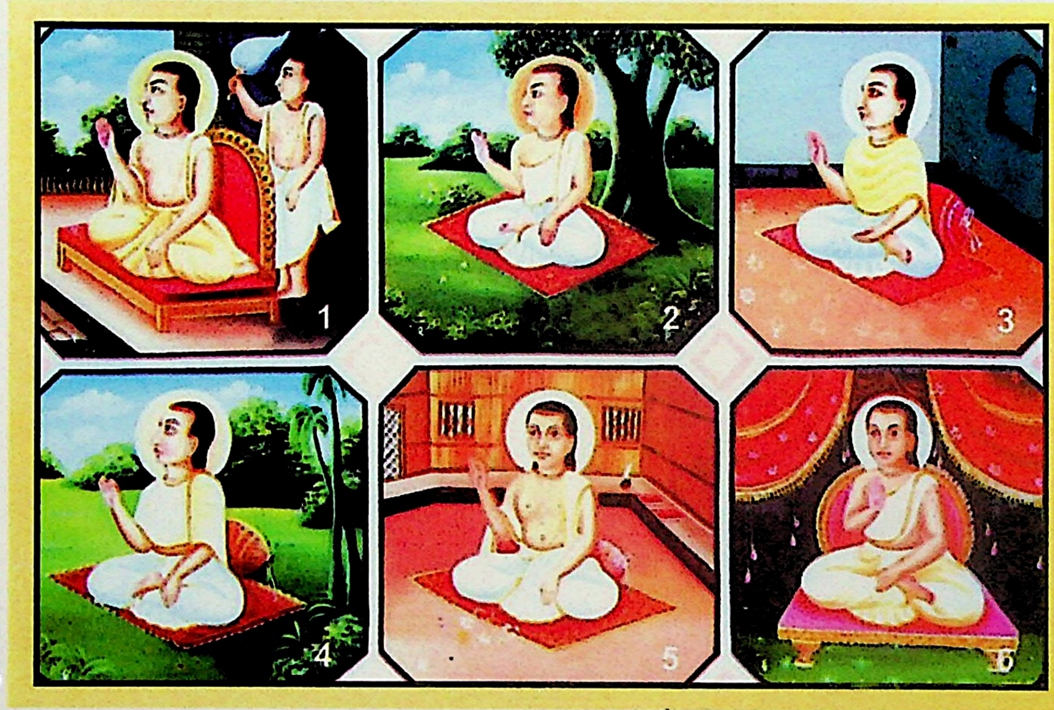
श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य

।। श्री राधासर्वेश्वरो जयति।।

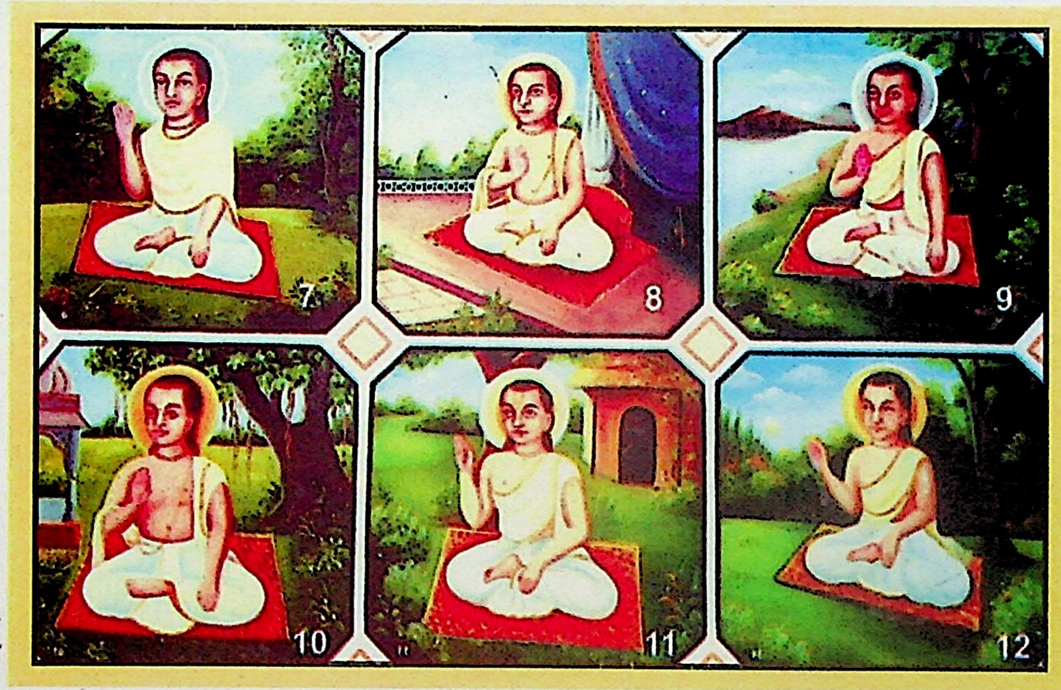


पाञ्चजन्य शंखावतार वेदान्त कौस्तुभ भाष्यकार

आचार्यवर्य श्रीनिवासाचार्यजी



श्रीद्वादश आचार्य में– १. श्रीनिवासाचार्य, २. श्रीविश्वाचार्य, ३. वेदान्तरत्न मञ्जूषाकार श्री पुरुषोत्तमाचार्य, ४. श्रीविलासाचार्य, ५. श्रीस्वरूपाचार्य, ६. श्रीमाधवाचार्य



७. श्रीबलभद्राचार्य, ८. श्रीपद्माचार्य, ९. श्रीश्यामाचार्य, १०. श्री गोपालाचार्य
११. श्री कृपाचार्य, १२. जान्हवी (ब्रह्मसूत्र भाष्य) कार श्रीदेवाचार्य



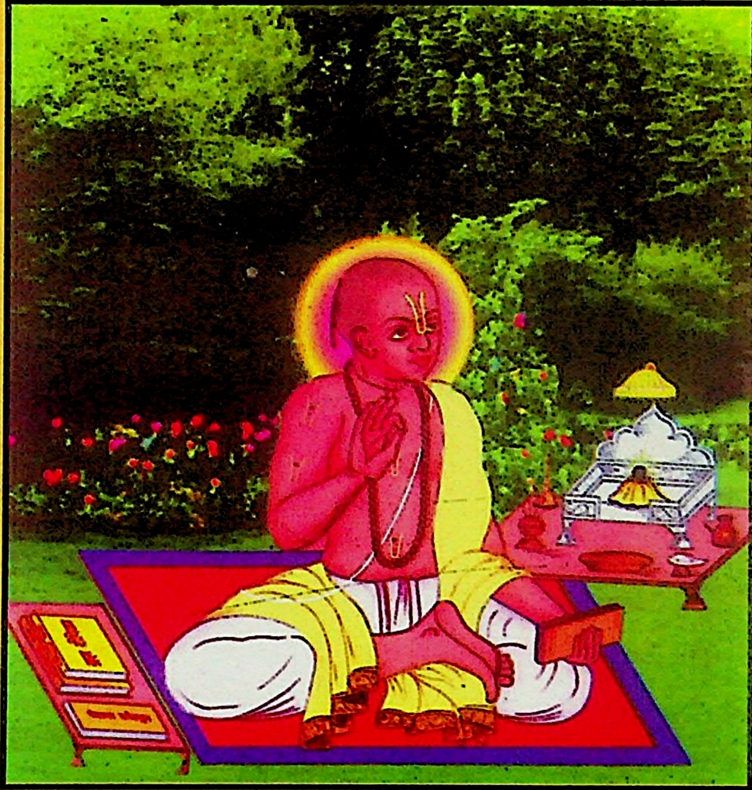
अष्टादश भट्टाचार्य में——१. सेतुका (जान्हवी व्याख्या) कार श्रीसुन्दरभट्टाचार्य, २. श्रीपद्मनाभट्टाचार्य,
३. श्रीउपेन्द्रभट्टाचार्य, ४. श्रीरामचन्द्रभट्टाचार्य, ५. श्रीवामनभट्टाचार्य, ६. श्रीकृष्णभट्टाचार्य,
७. श्रीपद्माकरभट्टाचार्य , ८. श्रीश्रवणभट्टाचार्य , ९. श्रीभूरिभट्टाचार्य



१०. श्री माधवभट्टाचार्य, ११. श्रीश्यामभट्टाचार्य, १२. श्रीगोपालभट्टाचार्य, १३. श्रीबलभद्रभट्टाचार्य,
१४. श्रीश्रीगोपीनाथभट्टाचार्य, १५. श्रीकेशवभट्टाचार्य, १६. श्रीगाङ्गलभट्टाचार्य,
१७. श्रीकेशवकाश्मीरिभट्टाचार्य, १८. श्रीश्रीभट्टदेवाचार्य

।। श्री राधासर्वेश्वरो जयति।।

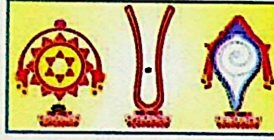




प्रभावृत्तिकार जगद्विजयी आचार्यवर्य

श्रीकेशवकाश्मीरिभट्टाचार्यजी

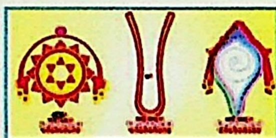
।। श्री राधासर्वेश्वरो जयति।।



ब्रजभाषा आदिवाणी——श्रीयुगलशतककार

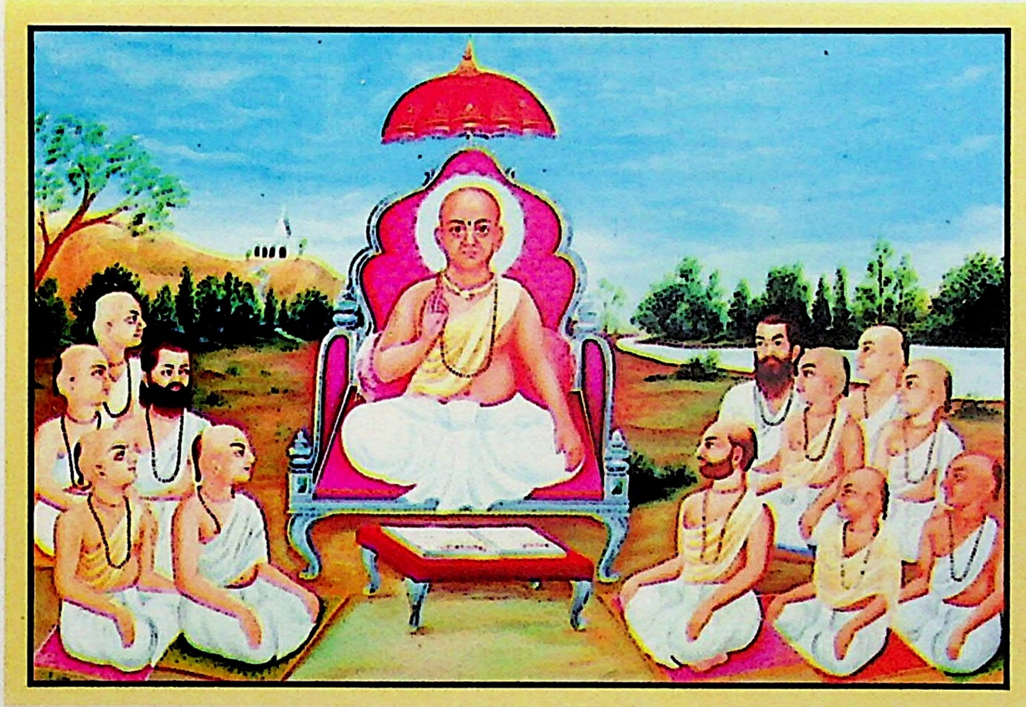
आचार्यवर्य श्रीश्रीभट्टदेवाचार्य

।। श्री राधासर्वेश्वरो जयति।।



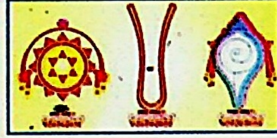
महावाणी—कार

आचार्यवर्य श्रीहरिव्यासदेवाचार्य



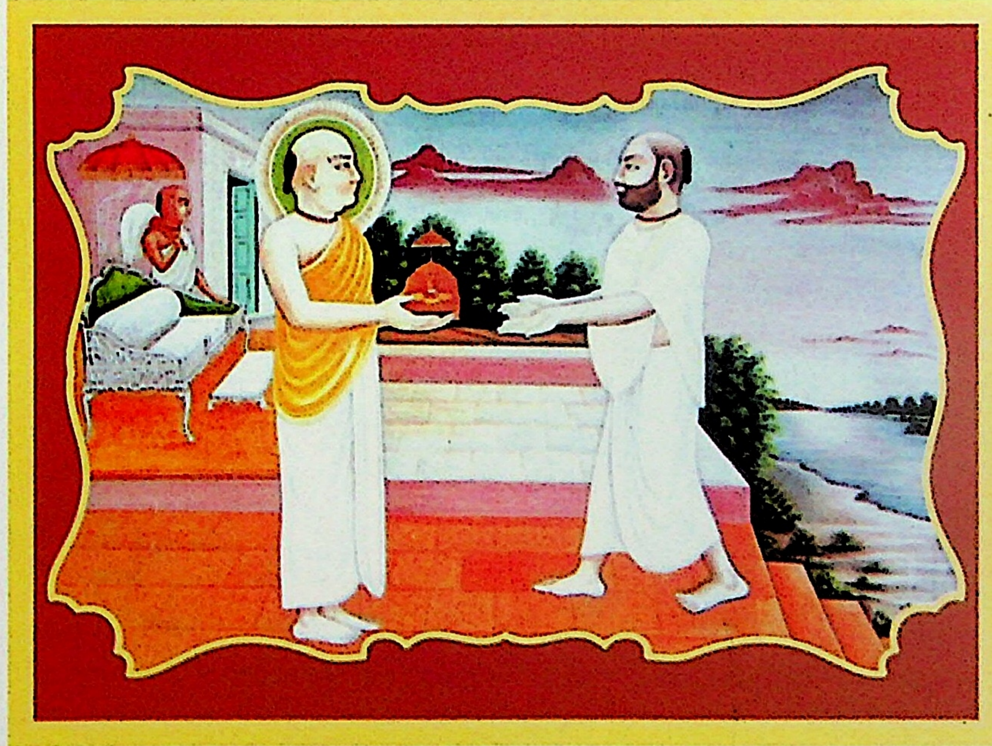
अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर रसिकराजराजेश्वर महावाणीकार श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज अपने द्वादश शिष्यों को उपदेश प्रदान करते हुए।

।। श्री राधासर्वेश्वरो जयति।।



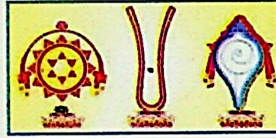


ब्रजप्रदेश से मरु प्रदेशस्थ पुष्कर क्षेत्रीय निम्बार्कतीर्थस्थ–
अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के संस्थापक आचार्यवर्य
वाणी ग्रन्थकार श्री परशुरामदेवाचार्यजी (श्री स्वामीजी) महाराज



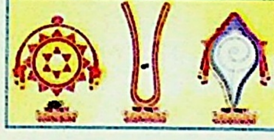
कालिन्द गिरि नन्दिनी श्रीकृष्ण प्रिया श्रीयमुना तटवर्ती अपने स्थान श्रीनारद टीला पर श्रीहरिव्यासदेवाचार्य जी महाराज श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी को श्री सर्वेश्वर प्रभु की सेवा समर्पण करते हुए।

।। श्री राधासर्वेश्वरो जयति।।



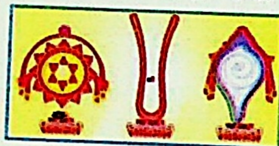
व्रजप्रदेश से मरु प्रदेशस्थ पुष्कर क्षेत्रीय निम्बार्कतीर्थस्थ–
अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के संस्थापक आचार्यवर्य
वाणी ग्रन्थकार श्री परशुरामदेवाचार्यजी (श्री स्वामीजी) महाराज

।। श्री राधासर्वेश्वरो जयति।।



आचार्यवर्य श्रीहरिवंशदेवाचार्य

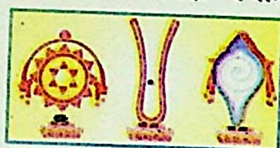
।। श्री राधासर्वेश्वरो जयति।।



आचार्यचरित–ग्रन्थकार

आचार्यवर्य श्रीनारायणदेवाचार्य

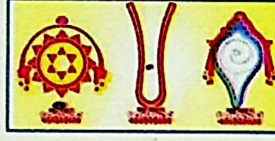
।। श्री राधासर्वेश्वरो जयति ।।



गीतामृतगङ्गा—वाणीकार

आचार्यवर्य श्रीवृन्दावनदेवाचार्य

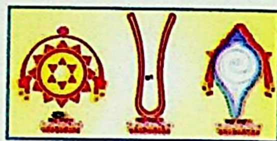
।। श्री राधासर्वेश्वरो जयति ।।



वाणीग्रन्थकार

आचार्यवर्य श्रीगोविन्ददेवाचार्य

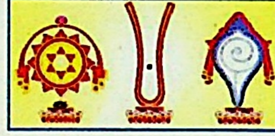
।। श्री राधासर्वेश्वरो जयति।।



गोविन्दवाणीग्रन्थकार

आचार्यवर्य श्री श्रीजी श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्य

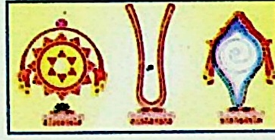
।। श्री राधासर्वेश्वरो जयति।।



श्रीमद्भागवत–सर्वेश्वरी व्याख्याकार

आचार्यवर्य श्री. श्रीजी श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

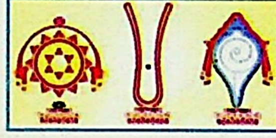
।। श्री राधासर्वेश्वरो जयति।।



संस्कृत स्तोत्रकार

आचार्यवर्य श्री श्रीजी श्रीनिम्बार्कशरणदेवाचार्य

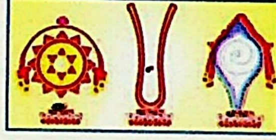
।। श्री राधासर्वेश्वरो जयति।।



संस्कृत स्तोत्रकार

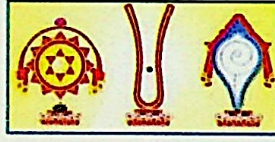
आचार्यवर्य श्री श्रीजी श्रीव्रजराजशरणदेवाचार्य

।। श्री राधासर्वेश्वरो जयति।।



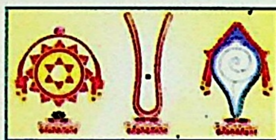
आचार्यवर्य श्री श्रीजी श्रीगोपीश्वरशरणदेवाचार्य

।। श्री राधासर्वेश्वरो जयति।।



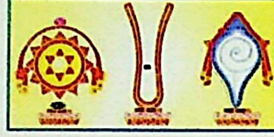
आचार्यवर्य श्री श्रीजी श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य

।। श्री राधासर्वेश्वरो जयति।।



अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी महाराज'

।। श्री राधासर्वेश्वरो जयति।।



अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी महाराज'



कोलाहल दैत्य के भय से विल्व वृक्ष पर शंकर, पीपल में विष्णु, शिरीष में इन्द्र, निम्ब–नीम में सूर्य ने सूक्ष्म रुप में आश्रय लिया। महाविष्णु ने प्रकट होकर दैत्य का वध किया जहाँ निम्ब वृक्ष में सूर्य ने निवास किया वही निम्बार्कतीर्थ कहलाया।